प्रेमचंद के फटे जूते

पाठ का सार / प्रतिपाद्य

यह पाठ प्रेमचंद के व्यक्तित्व में विद्यमान सादगी तथा साहित्यकार के रूप में उनके उत्कृष्ठ लेखन को दर्शाता है। लेखक हैरान है कि प्रेमचंद जैसा उपन्यास सम्राट कितना सरल और सादगी से भरा है। उसमें दिखावे की प्रवृत्ति दूर-दूर तक नहीं है। इसके अतिरिक्त वह साहित्यकार के रूप में अपने कर्तव्य का निर्वाह पूरी ईमानदारी से करते हैं। वह किसी भी स्थिति से समझौता नहीं करते हैं। अपनी गिरती आर्थिक स्थिति को अपने कर्तव्य के आगे नहीं आने देते। पूरी ईमानदारी से लिखते हैं।

प्रेमचंद की चारित्रिक / स्वभावगत विशेषताएँ

- सरल
- कुशल
- साहसी
- स्वार्थ रहित
- प्रतिभाशाली
- दृढ़-निश्चयी
- सादगी से भरे
- अतंर्भेदी दृष्टि
- उत्कृष्ठ लेखक
- कर्तव्यों के प्रति समर्पित
- सिद्धांतवादी तथा आदर्शवादी

पाठ का उद्देश्य

- यह पाठ हमें समाज में बढ़ रहे अवसरवादी स्वरूप को दर्शाता है।
- यह पाठ हमें समाज में व्याप्त दिखावे की प्रवृत्ति के विकृत स्वरूप को दर्शाता है।
- यह पाठ हमें प्रेमचंद के जीवन में व्याप्त सादगी और उनके विराट व्यक्तित्व के दर्शन करवाता है।

पाठ से मिलने वाली शिक्षाएँ / संदेश / प्रेरणा

- यह पाठ शिक्षा देता है कि हमें अपने समाज तथा देश की भलाई के लिए निरंतर कार्य करते रहना चाहिए।
- यह पाठ हमें शिक्षा देता है कि हमें अवसरवादी स्वरूप को अपने व्यक्तित्व से दूर रखना चाहिए।
- यह पाठ हमें शिक्षा देता है कि हमें हमने मार्ग पर दृढ़तापूर्वक बढ़ते रहना चाहिए।
- यह पाठ हमें शिक्षा देता है कि हमें दिखावे की प्रवृत्ति से दूर रहना चाहिए।